

Question: Is it right to copy something?

प्रश्न : क्या किसी चीज़ का अनुकरण करना उचित है?

Krishnamurti: Let us go step by step. When I use English, I am copying English, am I not? When you speak Hindi, you are copying the words, you are learning the words, you are repeating the words, and so it is a form of imitation. When I put on this kurta, this pajama, it is a certain form of copying. When I write, when I repeat a song, when I read, when I learn mathematics, there is a certain imitation, is there not? So, there is copying, imitation, at a certain level. But at a certain other level of our life, there need not be just imitation. There are all kinds of issues, problems. Let us go into them slowly.

कृष्णमूर्ति : आइए, इस बारे में हम धीरे-धीरे विचार करें। जब मैं अंग्रेजी का प्रयोग करता हूँ तो मैं अंग्रेजी की नकल करता हूँ, है न? जब आप हिंदी बोलते हैं तो आप शब्दों की नकल करते हैं, आप शब्दों को सीख रहे होते हैं, आप शब्दों को दोहरा रहे होते हैं और इस प्रकार यह एक प्रकार का अनुकरण है। जब मैं यह कुर्ता, यह पाजामा पहनता हूँ तो यह भी एक खास तरह का अनुकरण ही होता है। जब मैं लिखता हूँ, मैं किसी गीत को दोहरा रहा होता हूँ, पढ़ रहा होता हूँ, जब मैं गणित सीख रहा होता हूँ तो इस सब में अनुकरण का भी कुछ-न-कुछ स्थान होता ही है, होता है न? अतएव उस स्तर पर दोहराना, दूसरे का अनुकरण करना तो स्वाभाविक ही है। परंतु जीवन के एक अन्य स्तर पर केवल अनुकरण करने भर से काम नहीं चल सकता। इससे जुड़े अनेक मुद्दे हैं, अनेक समस्याएँ हैं। हम धीरे-धीरे उन सब पर विचार करेंगे।

We copy tradition, tradition is copying. When you do puja, when you put on sacred thread, that is also imitation. When you do puja or some of these things, do you say to yourself, 'Why should I do it?' You never question it. You merely accept it because your parents do it, society does it; and you just thereby become an imitative machine. You never say, 'Why should I do any puja? What is the meaning of it? Has it any meaning?' If it has any meaning, you have to find it out, and you are not to be told by somebody else that it has such and such a meaning. You have to find out, and to find out, you must be unprejudiced, you must not be against it or for it. That requires a great deal of intelligence, that requires fearlessness.

हम परंपरा की नकल करते हैं, परंपरा एक प्रकार का अनुकरण ही है। जब आप पूजा करते हैं, जनेऊ धारण करते हैं तो वह भी अनुकरण करना ही है। जब आप पूजा आदि का या इस तरह का कोई अन्य कार्य करते हैं तो क्या अपने आप से पूछते हैं, "मैं इसे किसलिए करूँ?" आप इस बारे में कभी प्रश्न नहीं करते। आप इसे केवल इसलिए स्वीकार कर लेते हैं क्योंकि माता-पिता भी इसे करते हैं, समाज इसे करता है, और बस ऐसा ही करते-करते आप अनुकरण करने वाली मशीन भर बन कर रह जाते हैं। आप कभी यह नहीं पूछते, "मैं पूजा आदि क्यों करूँ? इसे करने का क्या प्रयोजन है? क्या इसका कोई मतलब है? यदि इसे करने का कोई अर्थ है तो आपको इसका पता लगाना होगा, ऐसा नहीं कि कोई अन्य आपको इस बारे में बतलाए कि इसका यह मतलब है, यह अर्थ है। आपको ही इसका पता लगाना पड़ेगा और इसका पता लगाने के लिए आपको पूर्वाग्रह रहित होना होगा, आपको पक्ष-विपक्ष के पार जाना होगा। इसके लिए बहुत अधिक विवेक की ज़रूरत है, और साथ ही निडरता की।

Most old people have some guru or other round the corner. Why should

बड़ी उम्र के अधिकांश लोगों के पास कोई गुरु होता है या कोई सहारा देने वाला। चूंकि उनका कोई गुरु

you have a guru merely because the old people have one? This means you have to find out why they have one. They have one because they are afraid, they want to arrive in heaven safely. Neither they nor you know if there is a heaven. Their heaven is what they imagine it to be. So, you need a great deal of scepticism—not doubt—to find out, and not to be smothered by the older people and by their ideas of what is true, what is real, what is right and wrong.

Inevitably there must be a certain amount of imitation, like any song, or mathematics, and so on. But the moment that imitation is carried over into psychological feeling, it becomes destructive. Do you know what that word psychological means? It means the self, the ego, the subtler feelings, the inward nature. When imitation begins there, then there is no creativeness. This is a very complex problem because imitation means action according to a pattern. Imitation, copying, means the acceptance of action according to memory. Experience is inevitably imitation because all experience is dictated by the past, and the past is imitation.

The difficulty is to see whether imitation is inevitable and to be free inwardly of all imitation. That requires a great deal of thinking—that is real meditation. If the mind can free itself from all projected images and thoughts which are imitative, then only is there a possibility of reality, God, or truth coming into being. A mind that is imitative can never find what is real.

Question: How can we avoid laziness?

है क्या इसलिए आपके लिए भी एक गुरु होना आवश्यक है? कहने का आशय यह है कि आपको इसका पता लगाना चाहिए कि उन्हें गुरु की आवश्यकता क्यों पड़ती है। वे इसलिए गुरु बनाते हैं क्योंकि वे भय से ग्रस्त हैं, वे सुरक्षित रूप से स्वर्ग पहुंचना चाहते हैं। न तो उन्हें पता है और न आपको पता है कि स्वर्ग होता भी है कि नहीं। उनका स्वर्ग उनकी कल्पना के अनुसार कल्पित होता है। अतः आपको अत्यधिक सतर्कतापूर्वक, न कि संदेहपूर्वक, इसका पता लगाना होगा कि वास्तविकता क्या है, क्या सही है और क्या गलत है, बड़ों से और वास्तविकता के बारे में उनकी धारणाओं से दबना नहीं है।

अनुकरण करना एक सीमा तक तो आवश्यक होता है, जैसे किसी गीत को या गणित आदि सीखने के लिए। किंतु अनुकरण करने की प्रवृत्ति को जैसे ही मनोवैज्ञानिक स्तर पर आचरण में लाया जाता है, जब भावना के स्तर पर अनुकरण किया जाने लगता है तो वह नुकसानदायक हो जाता है। क्या आप जानते हैं 'मनोवैज्ञानिक' का अर्थ क्या है? इसका अर्थ होता है स्व, अहं, सूक्ष्मतर भावनाएं, अंतःकरण का स्वभाव। जब उस तल पर अनुकरण प्रारंभ हो जाता है तो सृजनात्मकता खो जाती है। यह एक अत्यंत जटिल समस्या है, क्योंकि अनुकरण करने का, अनुरूप होने का अर्थ है किसी तय सांचे के अनुसार कार्यरत होना। अनुसरण करने का, अनुरूप होने का अर्थ है स्मृति के अनुसार कर्म करने को सही मानना। अनुभव अनुकरण ही है क्योंकि अतीत ही अनुभव को निर्देशित करता है और अतीत अनुकरण ही है।

यहां कठिनाई इसे देख पाने में हो सकती है कि क्या अनुकरण बहुत ज़रूरी है, और आंतरिक धरातल पर किए जाने वाले अनुकरण से कैसे मुक्त हुआ जा सकता है? इसके लिए गंभीर चिंतन करने की ज़रूरत होती है—यही वास्तविक ध्यान है। जब मन स्वयं को उन सारी प्रतिमाओं और विचारों से मुक्त कर सके जो अनुकरणभर होते हैं केवल तभी वास्तविकता का, ईश्वर का या सत्य का आविर्भाव संभव होता है। नकल करने वाला चित्त वास्तविकता को कभी नहीं पा सकता।

प्रश्न : आलस्य से कैसे बचा जाए?

Krishnamurti: Let us find out together how to avoid laziness. Because it is your question, I am not just going to answer it. You and I are going to find out together.

You may be lazy because you are eating the wrong kind of food, or you may be lazy because you have inherited from your parents a lethargic body, or your liver is not working properly or you have not enough calcium, which means milk. Your laziness may be an escape from the things which you are afraid of. You become lazy because you do not want to go to school, you do not want to study because you are not interested in study. But you are not lazy if you go and play a game, you are not too lazy to quarrel with somebody. Your laziness may be due to lack of the right kind of food, or an inherited tendency from the parents, or an escape. Do you understand what I mean by 'escape'? You want to escape from what you do not want to do; therefore, you become lazy. You do not want to study because you are not interested in studies, studying is a bore, and the teacher is not very good, he is also a bore. So you say, 'All right,' and you become lazy.

So, the teacher and you have to find out if you have the right food; perhaps with right food you will become active. Your teacher has to find out what you are really interested in—mathematics, geography, or building something. Then, in doing that, you will become active. All these factors have to be gone into. The teacher must not say, 'You are a very lazy boy, you will be punished, you will get lower marks.'

कृष्णमूर्ति : आइए मिलकर इसका पता लगाएं कि आलस्य करने से कैसे बचा जा सकता है। चूंकि यह आपका प्रश्न है इसलिए अकेला मैं ही इसका उत्तर दूँ, ऐसा नहीं होगा। आपको तथा मुझे मिलकर इसका पता लगाना होगा।

आप शायद इसलिए आलस्य करते हैं क्योंकि आपका खान-पान उचित प्रकार का नहीं है, या शायद इसलिए क्योंकि अपने माता-पिता से जो शरीर आपने पाया है वह आनुवंशिक रूप से सुस्त है--या हो सकता है कि आपका लीवर ठीक ढंग से कार्य नहीं कर रहा हो या आप में कैल्सियम की कमी हो यानी आप दूध नहीं पीते हों। आपमें आलस्य होने का एक कारण यह भी हो सकता है कि इसके ज़रिए आप उन चीजों से पलायन कर सकें जिनसे आप भयभीत हैं। आप इसलिए आलस्यपूर्ण हो सकते हैं क्योंकि आप स्कूल जाना नहीं चाहते हों, क्योंकि आप पढ़ना-लिखना नहीं चाहते हों, क्योंकि आपकी पढ़ने-लिखने में रुचि ही न हो। पर जब बाहर जाकर खेलने का अवसर मिलता है तो आप बिलकुल आलस्य नहीं करते, किसी से झगड़ा करना हो तो आप आलस्य महसूस नहीं करते। आपके आलस्य का कारण उचित प्रकार का खान-पान न होना, या माता-पिता से प्राप्त आनुवंशिक प्रवृत्ति, या पलायन करना मात्र हो सकता है। 'पलायन' शब्द से मेरा क्या मतलब है, आप समझ रहे हैं? जिसे आप नहीं करना चाहते उससे आप पलायन करते हैं, भागते हैं और इस प्रकार आप आलस्य का शिकार हो जाते हैं। आप पढ़ना-लिखना नहीं चाहते क्योंकि पढ़ने-लिखने में आपकी बिलकुल दिलचस्पी नहीं है, पढ़ना ऊब पैदा करता है और फिर आपका शिक्षक भी कुछ खास अच्छा नहीं है, वह भी उबाऊ है। इसलिए आप कहते हैं 'ठीक है' और आप आलसी हो जाते हैं।

अतः शिक्षक को तथा आपको इस बारे में जानना होगा कि क्या आपका भोजन उचित ढंग का है, शायद ठीक ढंग का भोजन आपको स्फूर्तिवान बनाए। आपके शिक्षक को इस बारे में पता लगाना होगा कि वास्तव में आपकी रुचि किसमें है--गणित में, भूगोल में, या किसी चीज़ को बनाने में। तब उसे करते-करते आपमें स्फूर्ति आने लगेगी। इन सभी पहलुओं के बारे में सोचा जाना आवश्यक है। शिक्षक का यह कहना 'आप बहुत सुस्त हैं, आपको इसकी सज़ा मिलेगी, आपको कम अंक दिए जाएंगे' ठीक नहीं है।